शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -6
June
2025

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका: एक ऐतिहासिक अध्ययन

आलोक कुमार गुप्ता
शोधार्थी
डॉ. आलोक कुमार पाण्डेय
शोध पर्यवेक्षक
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सार

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एक बहुआयामी और बहु आवाज आंदोलन था, जिसमें विभिन्न वैचारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक धाराओं ने सहभागिता निभाई। इस संघर्ष का इतिहास केवल कांग्रेस, क्रांतिकारियों या समाज सुधारकों तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें अनेक ऐसे संगठन भी सम्मिलित रहे जिन्होंने प्रत्यक्ष न सही, किंतु अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र निर्माण और जन जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्हीं संगठनों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का नाम भी उल्लेखनीय है। हालांकि संघ की भूमिका को लेकर इतिहासकारों और चिंतकों में मतभेद हैं, परंतु यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि उसने स्वतंत्रता से पूर्व और पश्चात भारतीय समाज को संगठित करने की दिशा में एक स्थायी प्रभाव डाला।

कुंजीभूत शब्द

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, डॉ.केशव बलिराम हेडगेवार, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, नमक कानून, भारत छोड़ो आंदोलन।

शोध विस्तार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 27 सितंबर 1925 को नागपुर में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा की गई। डॉ. हेडगेवार स्वयं एक राष्ट्रभक्त क्रांतिकारी थे जिन्होंने कांग्रेस और असहयोग आंदोलन के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। उन्होंने अनुभव किया कि भारत की स्वतंत्रता केवल राजनीतिक दृष्टि से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक पुनरुत्थान के माध्यम से ही स्थायी हो सकती है। इसी सोच से प्रेरित होकर उन्होंने एक ऐसा संगठन खड़ा किया जो राष्ट्र को भीतर से मजबूत करने पर केंद्रित था। स्वतंत्रता संग्राम में

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -6
June
2025

संघ की भूमिका को लेकर दो धारणाएँ प्रचलित हैं। एक ओर कुछ विचारकों का मानना है कि संघ ने प्रत्यक्ष राजनीतिक आंदोलनों में भाग न लेकर स्वतंत्रता संग्राम से दूरी बनाए रखी, जबकि दूसरी ओर यह तर्क दिया जाता है कि संघ का कार्य क्षेत्र राजनीतिक संघर्ष नहीं, बल्कि सामाजिक संगठन और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद था। संघ की शाखाओं के माध्यम से युवा पीढ़ी में अनुशासन, राष्ट्रभक्ति और चरित्र निर्माण का बीजारोपण किया गया, जिससे एक दीर्घकालीन राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई।[1]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) की स्थापना 27 सितम्बर 1925 को विजयादशमी के पावन अवसर पर नागपुर, महाराष्ट्र में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा की गई थी। संघ की स्थापना उन परिस्थितियों में हुई जब भारत परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था और समाज में धार्मिक, जातीय, भाषायी एवं सांस्कृतिक विभाजन गहराता जा रहा था। विदेशी शासन के कारण भारतीय समाज आत्मगौरव, एकता और राष्ट्रीय चेतना से वंचित होता जा रहा था। हेडगेवार जी का मानना था कि जब तक समाज संगठित नहीं होगा, तब तक स्वतंत्रता और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण संभव नहीं है। प्रथम विश्व युद्ध और खिलाफत आंदोलन के बाद देश में बढ़ती अस्थिरता, सामाजिक विघटन और सांप्रदायिक तनावों ने उन्हें यह सोचने पर विवश किया कि एक ऐसा संगठन होना चाहिए जो राष्ट्रभक्ति, अनुशासन, चरित्र निर्माण और सांस्कृतिक गौरव के आधार पर समाज को संगठित कर सके। इसी उद्देश्य को लेकर उन्होंने आर.एस.एस. की नींव रखी। प्रारंभ में यह संगठन सीमित क्षेत्र तक ही सीमित रहा, लेकिन समय के साथ इसकी शाखाएँ देशभर में फैलती गईं। संघ की कार्यप्रणाली शाखा आधारित है, जहाँ शारीरिक व्यायाम, बौद्धिक चर्चा, देशभक्ति गीतों और अनुशासन के माध्यम से स्वयंसेवकों का सर्वांगीण विकास किया जाता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ न केवल एक संगठन है, बल्कि यह एक विचारधारा और जीवनपद्धति बन चुका है, जो "विश्व के कल्याण के लिए भारत के पुनरुत्थान" में विश्वास रखता है।[2]

नमक सत्याग्रह में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार प्रारम्भिक काल में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से सक्रिय रूप से जुड़े रहे। उन्होंने 1920 के नागपुर अधिवेशन में एक प्रांतीय नेता के रूप में पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसे कांग्रेस नेतृत्व द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। यद्यपि इस अस्वीकृति के पश्चात उन्होंने स्वतंत्र रूप से देश की आज़ादी के

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3 Issue -6 June 2025

लिए कार्य करना आरम्भ कर दिया। 6 अप्रैल 1930 को महात्मा गांधी द्वारा दांडी में नमक कानून तोड़कर प्रारम्भ किए गए सविनय अवज्ञा आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में संघ ने भी अपनी भूमिका स्पष्ट रूप से निभाई। यद्यपि उस समय तक संघ का कार्यक्षेत्र मुख्यतः मध्यभारत तक ही सीमित था, फिर भी इस आंदोलन के प्रभाव को देखते हुए संघ ने सक्रिय भागीदारी का निर्णय लिया। गांधी जी के नमक कानून तोड़ने की तर्ज पर संघ के कार्यकर्ताओं ने जंगल कानून तोड़कर सत्याग्रह करने का संकल्प लिया।[3]

डॉ. हेडगेवार ने संघ के सरसंघचालक का दायित्व डॉ. परांजे को सौंप कर स्वयं कई स्वयंसेवकों के साथ सत्याग्रह में भाग लिया। जुलाई 1930 में वे यवतमाल की ओर जाते हुए 'पुरसद' नामक स्थान पर एक जनसभा में स्वतंत्रता संग्राम के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए उन्होंने अंग्रेजों की लूट-व्यवस्था और दमनकारी शासन के विरुद्ध तीव्र भाषण दिया। उनके साथ लगभग 12 प्रमुख स्वयंसेवक, जिनमें उप्पाजी जोशी, दादाराव परमार्थ आदि प्रमुख थे, सत्याग्रह में सम्मिलित हुए और उन्हें नौ माह का कठोर कारावास भी भोगना पड़ा। इसके पश्चात संघ के अन्य वरिष्ठ कार्यकर्ता जैसे श्री माटे राव जोग, श्री उप्पाजी हांडे तथा अन्य अनेक स्वयंसेवकों ने विभिन्न शाखाओं से सत्याग्रह में सक्रिय भागीदारी की। सत्याग्रहियों की सुरक्षा हेतु 100 स्वयंसेवकों की टोलियां गठित की गईं जो सत्याग्रह के समय सतत उपस्थित रहती थीं। 8 अगस्त को नागपुर में धारा 144 का उल्लंघन कर निकाले गए जुलूस में पुलिस की बर्बरता के कारण कई स्वयंसेवक घायल हुए। डॉ. हेडगेवार ने कारावास में रहते हुए विजयदशमी 1931 के अपने संदेश में आत्मनिर्भर राष्ट्र की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा था —

"देश की परतंत्रता तभी समाप्त होगी जब समाज शक्तिशाली होगा। आत्मनिर्भरता के बिना मनुष्य को स्वतंत्रता के कोई अधिकार नहीं मिल सकते।"[4]

भारत छोड़ो आंदोलन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका

भारत छोड़ो आंदोलन (1942) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक निर्णायक चरण था, जिसमें देशव्यापी असहयोग और प्रतिरोध की भावना अपने चरम पर थी। यद्यपि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) का औपचारिक रूप से राजनीतिक आंदोलनों में भाग लेने का प्रत्यक्ष उद्देश्य नहीं था, तथापि इस आंदोलन के दौरान संघ के स्वयंसेवकों ने देशभक्ति और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना के तहत विभिन्न प्रकार से अप्रत्यक्ष सहयोग प्रदान किया। जैसा कि ऐतिहासिक स्रोतों और घटनाओं से ज्ञात होता है, संघ के अनेक स्वयंसेवकों ने ब्रिटिश शासन के दमनचक्र से बचने के लिए भूमिगत कार्यों में भाग लिया और क्रांतिकारी गतिविधियों में

संलग्न स्वतंत्रता सेनानियों को आश्रय, सहयोग एवं गुप्त सूचनाएँ प्रदान कीं। उदाहरणस्वरूप, नागपुर के तत्कालीन नगर कार्यवाह श्री रामराजे तथा उपखंड प्रचारक श्री देशपांडे द्वारा विद्रोही नेताओं को शरण और रणनीतिक सहयोग दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप वे ब्रिटिश गिरफ्तारी से बच पाए। इसके अतिरिक्त, दिल्ली-मुंबई रेललाइन को बाधित करने के प्रयासों में भी संघ के स्वयंसेवकों की भागीदारी देखी गई, जिससे ब्रिटिश प्रशासन की गतिविधियाँ प्रभावित हुईं।[5]

RSS की भूमिका केवल संगठनात्मक या सामरिक स्तर पर ही सीमित नहीं थी, बल्कि विचारधारात्मक समर्थन भी उपलब्ध कराया गया। संघ के अनेक स्वयंसेवक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से प्रेरित होकर समाजवादी, गांधीवादी और अन्य राष्ट्रीय संगठनों के साथ मिलकर भी कार्य कर रहे थे। डॉ. नारायण अत्रेय, लाला हनुमंतराव जी तथा अन्य राष्ट्रप्रेमियों ने संघ के माध्यम से ऐसी रणनीतियाँ विकसित कीं, जिनसे स्वतंत्रता सेनानियों को वैचारिक तथा भौगोलिक समर्थन मिला।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि भले ही संघ का आधिकारिक दृष्टिकोण प्रत्यक्ष राजनीतिक आंदोलन में भाग लेने का नहीं था, परंतु 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान राष्ट्रहित में संघ के स्वयंसेवकों ने गुप्त, नैतिक और सामाजिक स्तर पर आंदोलन को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा आज़ाद हिंद फौज को सहयोग

द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि में भारत की स्वतंत्रता हेतु संगठित प्रयासों में आज़ाद हिंद फौज की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। इस संदर्भ में 20 दिसंबर 1943 को नागपुर में आयोजित एक गुप्त बैठक का विशेष महत्व है, जिसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा आज़ाद हिंद फौज को सहायता प्रदान करने पर गंभीरता से विचार किया गया। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष की भावना से प्रेरित होकर संघ के तत्कालीन नेतृत्व ने स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को सिद्ध किया । उक्त बैठक में यह निर्णय लिया गया कि रियासतों में सक्रिय संघ कार्यकर्ता सैन्य व गुप्तचर विभाग को आवश्यक सूचनाएँ प्रदान करेंगे, जिससे आज़ाद हिंद फौज को रणनीतिक लाभ प्राप्त हो सके। संघ द्वारा यह स्पष्ट किया गया कि यह सहयोग न तो राजनीतिक था और न ही सत्ता प्राप्ति की आकांक्षा से प्रेरित था, बल्कि इसका उद्देश्य सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की भावना से प्रेरित होकर भारतीयों को स्वाधीनता की ओर अग्रसर करना था।[6]

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3 Issue -6 June 2025

ब्रिटिश शासन की निगरानी और दमन के बावजूद, संघ कार्यकर्ताओं ने विभिन्न क्षेत्रों में गुप्त सूचनाएँ एकत्रित कर आज़ाद हिंद फौज तक पहुँचाईं। यह एक अद्वितीय उदाहरण है, जिसमें एक सांस्कृतिक संगठन ने राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए प्रत्यक्ष सैन्य सहयोग न देकर भी अप्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता संग्राम को बल प्रदान किया।

अतः यह स्पष्ट है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, भले ही प्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक आंदोलन में शामिल न रहा हो, किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति की दिशा में विभिन्न माध्यमों से राष्ट्रवादी शक्तियों को सहयोग प्रदान करता रहा। यह योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक अदृश्य किंतु महत्वपूर्ण पहलू को उजागर करता है, जो आज भी शोध एवं विश्लेषण की दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक है।

जम्मू-कश्मीर के भारत में विलय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका

1947 में देश के विभाजन के पश्चात् जम्मू-कश्मीर की राजनीतिक स्थिति अत्यंत संवेदनशील हो गई थी। पाकिस्तान इस क्षेत्र को अपना अंग बनाना चाहता था, जबकि महाराजा हरि सिंह स्वतंत्र रहना चाहते थे। इस असमंजस की स्थिति में, जब कश्मीर पर कबायली आक्रमण आरंभ हुआ, तब स्थिति और भी गंभीर हो गई। इस संकट की घड़ी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने कश्मीर की रक्षा हेतु सक्रिय भूमिका निभाई। संघ के स्वयंसेवकों ने न केवल कश्मीर की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ किया, बल्कि उन्होंने सीमावर्ती क्षेत्रों में निगरानी तथा स्थानीय लोगों के मनोबल को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। विशेष रूप से श्रीनगर और आसपास के क्षेत्रों में संघ के कार्यकर्ताओं ने सामाजिक समरसता बनाए रखने, अफवाहों का खंडन करने और जनता में राष्ट्रीय एकता की भावना जागृत करने में निर्णायक भूमिका निभाई।

जब महाराजा हरि सिंह की स्थिति डगमगाने लगी और उन्होंने भारत से सैन्य सहायता की अपील की, तब सरदार वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में संघ के संपर्क सूत्रों ने त्वरित कार्यवाही सुनिश्चित की। गुरुजी माधव सदाशिव गोलवलकर, जो संघ के तत्कालीन सरसंघचालक थे, को विशेष संदेश के साथ जम्मू भेजा गया। गुरुजी ने महाराजा से भेंट कर उन्हें भारत में विलय के लिए राज़ी किया। इस प्रकार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ न केवल कश्मीर की भौगोलिक रक्षा में, बल्कि उसके राजनीतिक निर्णय को भारत के पक्ष में प्रभावित करने में भी अहम भूमिका निभाई। जब भारत सरकार द्वारा सैन्य टुकड़ियाँ भेजी गईं, तब संघ के स्वयंसेवकों ने सेना के मार्गदर्शन, स्थानीय जानकारी प्रदान करने तथा आवश्यक रसद और सहयोग उपलब्ध कराने का कार्य किया।[7]

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -6
June
2025

यह उल्लेखनीय है कि जब सरकारी संस्थान और प्रशासनिक तंत्र किंकर्तव्यविमूढ़ था, उस समय संघ के प्रशिक्षित, अनुशासित और समर्पित कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रहित में साहसिक नेतृत्व प्रस्तुत किया। यह योगदान कश्मीर के भारत में विलय की प्रक्रिया में एक अदृश्य किंतु अत्यंत प्रभावी शक्ति के रूप में स्थापित हुआ।

गोवा मुक्ति आंदोलन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघकी भूमिका

भारत को 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त हुई, परंतु गोवा, दादरा और नगर हवेली, दीव तथा दमन जैसे अनेक क्षेत्र अभी भी पुर्तगाली शासन के अधीन थे। यह एक ऐतिहासिक विसंगति थी कि भारत की स्वतंत्रता के बाद भी इन क्षेत्रों में विदेशी औपनिवेशिक शासन जारी रहा। इसी संदर्भ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) ने इन क्षेत्रों की मुक्ति हेतु एक सशक्त और संगठित भूमिका निभाई। पुर्तगाली शासन के विरुद्ध संघर्ष को संगठित करने हेतु संघ ने रणनीतिक प्रयासों की रूपरेखा बनाई। महाराष्ट्र प्रांत के संघ कार्यकर्ताओं ने विशेष रूप से गोवा मुक्ति के लिए कार्य करना प्रारंभ किया। उल्लेखनीय है कि 1954 में संघ के स्वयंसेवकों का एक जत्था विनायक राव आठले और मुधीर फड़के के नेतृत्व में दादरा नगर हवेली की ओर प्रस्थान कर स्वतंत्रता का सफल प्रयास किया। इस अभियान में राष्ट्रभक्ति से प्रेरित युवाओं ने जान की बाजी लगाकर पुर्तगाली शासन के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष किया और वहाँ भारत का ध्वज फहराया।[8]

गोवा में भी इसी प्रकार का संगठित प्रयास 1955 में आरंभ हुआ। कर्नाटक से जनसंघ के नेता जगन्नाथ राव जोशी के नेतृत्व में लगभग 3000 स्वयंसेवकों ने गोवा मुक्ति संग्राम में भाग लिया, जिनमें बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल थीं। इन स्वयंसेवकों ने गोवा में प्रवेश कर स्वतंत्रता के प्रति जनमानस को जागरूक किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें 10 वर्षों की कठोर सजा सुनाई गई। इस दमन के विरोध में देशभर में आंदोलन प्रारंभ हुआ, जिससे जनता का दबाव बढ़ा और अंततः भारत सरकार को सैन्य हस्तक्षेप के लिए बाध्य होना पड़ा। 18 दिसंबर 1961 को भारत सरकार ने एक संगठित सैन्य अभियान – "ऑपरेशन विजय" – आरंभ किया, जिसमें थल, जल और वायु सेना की संयुक्त कार्रवाई द्वारा 36 घंटे के भीतर गोवा को 450 वर्षों के पुर्तगाली शासन से मुक्त करा लिया गया। इस संघर्ष में संघ के स्वयंसेवकों की राष्ट्रनिष्ठ प्रेरणा, अनुशासन, साहस और रणनीतिक भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही।[9]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने न केवल गोवा मुक्ति आंदोलन में प्रत्यक्ष भागीदारी निभाई, बल्कि स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता पश्चात् भारत के सामाजिक-राजनीतिक परिवेश में राष्ट्रीय

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -6
June
2025

चेतना के संवर्धन में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। संघ की यह भूमिका केवल एक संगठनात्मक पहल नहीं थी, अपितु यह एक दीर्घकालीन राष्ट्रसेवा भावना का परिचायक थी।

संदर्भ सूची

1. आंबेकर, सुनील, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, स्वर्णिम भारत के लिए दिशा सूत्र, प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2022
2. पाणिग्राही, दयानिधि. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट, 2005
3. गोखले, बालासाहेब देवरस. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का समाज जीवन में योगदान, पुणे: साहित्य प्रसारक मंडल, 1994
4. Desai, A.R. Social Background of Indian Nationalism. Bombay: Popular Prakashan, 1976.
5. दत्त, वी.एन. भारतीय राष्ट्रवाद और समाज सुधार, दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2002
6. सिन्हा, डॉ. राकेश, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ: एक वैचारिक आंदोलन, नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, 2018
7. "आरएसएस की जम्मू-कश्मीर नीति", पांचजन्य, जनवरी 1948, पृष्ठ 7–9।
8. भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अभिलेख, गोवा मुक्ति संग्राम संबंधी दस्तावेज (1954–1961)
9. Government of India. White Paper on Goa, Daman and Diu Liberation (1961). Ministry of External Affairs.